The Indian EXPRESS
JOURNALISM OF COURAGE

An ancient Greek tragedy by Euripedes, the play follows the trajectory of a woman, who kills both their children to avenge herself on her husband who has left her for another woman.

In a small town of Rajasthan, Arain, a woman arrived to watch Medea while henna dried in her hair, under a scarf. She stayed for the entire performance and then clung to Anuradha Marwaha, director of the play, and cried. “But, why did Medea kill the children?” she asked, and added the answer, “Because she wanted to end the bloodline of her husband, Jason.” After another show, a man announced to the packed gathering: “The fault must be Medea’s. No husband would leave his wife for no reason.” An angry woman rose to confront him with a monologue that began with “Thank you ji. It is always the fault of the ladies.”

Marwah's script increases the protagonit's emotional complexity by highlighting her love for her children.

Through its run of 15 performances in 2019, at venues spanning Studio 81 in Vasant Kunj and Gargi College for Women in Delhi to Nithari Basti in Uttar Pradesh and the Shaktishalini Shelter Home for Women in Ajmer, Medea has cracked through gender beliefs of audiences. An ancient Greek tragedy by Euripedes, the play follows the trajectory of a woman, who kills both their children to avenge herself on her husband who has left her for another woman. "To me, Medea has always seemed vey political. When a system does something wrong by a certain people, and you push them and push them until you leave them with no option, then something gives. I feel that women are, time and again, pushed into impossible situations," says Marwah, a Delhi-based academic who made her debut as a theatre director with Medea. The play is the first under the banner of Samtal: Theatre for Everyone of Delhi-based Pandies Theatre.

Through its run of 15 performances in 2019, at venues spanning Studio 81 in Vasant Kunj and Gargi College for Women in Delhi to Nithari Basti in Uttar Pradesh and the Shaktishalini Shelter Home for Women in Ajmer, Medea has cracked through gender beliefs of audiences.

“I have written on theatre but shied away from directing because it involves a lot of interaction with people. With Medea, I fell in love with the play. Medea is claiming the right that wasn’t there for women – the right for life and death. She is asserting eher right, these are mine, in a society here nothing belongs to her,” says Marwah, who collaborated on stagecraft with Michelle Hensley and Kira Obolensky, founder and playwright, respectively, of Ten Thousand Things Theatre from the US.

To prepare her lead actor, Marwah handed a copy of Toni Morrison’s Beloved, about a woman who kills her daughter to prevent her from being taken as a slave. Marwah’s script increases the protagonist’s emotional complexity by highlighting her love for her children. The play is performed in the round by seven actors, their dialogues and actions accompanied by live music and dance.

To prepare her lead actor, Marwah handed a copy of Toni Morrison’s Beloved, about a woman who kils her daughter to prevent her from being taken as a slave.

“Medea was written more than 2,000 years ago. We believe that such plays that have endured for centuries have the potential to delight, instruct and humanise. They are civilizational wealth that should be shared and disseminated. With, Samtal, we plan to take classical theatre out of auditoriums and elite intellectual spaces directly to the people,” says Marwah.

कला संस्कृति • अनुराधा मारवा के निर्देशन में दिल्ली यूनिवर्सिटी के छात्र-छात्राओं ने किया नाटक का मंचन

थिएटर के कलाकारों ने दी ग्रीक नाटक की प्रस्तुति

भास्कर न्यूज | अराईं

विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रीक नाटकों और थियेटर को आम जन तक पहुंचाने के लिए पैंडिज थियेटर के कलाकारों ने रविवार को ग्रीक महिला की मार्मिक कहानी का भक्ति कुंज में मंचन किया।

पैंडिज थियेटर की निर्देशिका अनुराधा मारवा ने बताया कि रविवार को अराईं में ट्रेजडी मीडिया नाटक का मंचन किया गया। इसमें एक महिला द्वारा उसके साथ नारी उत्पीड़न से लगी ठेस का मंचन किया गया। नारी उत्पीड़न के दौरान किस दौर से गुजरती है एवं तनाव में किस प्रकार के फैसले ले सकती है का संदेश दिया गया। थियेटर के कलाकारों ने ग्रीक भाषा के नाटक का हिन्दी रूपांतरण कर तालियां बटोरी। मारवा द्वारा निर्देशित नाटक में दिल्ली यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स ने अपनी प्रस्तुति दी।

सैकड़ों साल पुराने ग्रीक नाटक का हिंदी में रूपांतरण दिल्ली की जानीश, जीशान, अरहम, रोबिन सिंह, समीर, प्रिया एवं निर्भय ने किया। निर्देशिका अनुराधा मारवा ने बताया कि विश्व स्तरीय नाटकों का मंचन अब तक ऊंचे स्तर पर किया जाता रहा है परन्तु थियेटर को आम जन तक पहुंचा कर ग्रामीणों में थियेटर के प्रति जागरूक करना उनका उद्देश्य है। कार्यक्रम को प्रौढ़ शिक्षा से जुड़े फैजान हसन, कवि कमल माहेश्वरी, सामाजिक कार्यकर्ता गिरधर गोपाल शर्मा, बद्री प्रसाद शर्मा, शंकर लाल शर्मा, वार्ड पंच गोपाल गुर्जर, महेन्द्र पुरी, राजेश शर्मा, डा. गोपाल सिंह, मुकेश कलवार, योगेश दौलतवाल ने संबोधित किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

अराईं. दिल्ली के थिएटर कलाकारों ने रविवार को दी नाटक की प्रस्तुति।

इस दिन सुबह 8 से शाम 6 बजे तक जिले के समस्त छात्रावासों में छुआछुत उन्मूलन पर विचार गोष्ठी एवं विशेष सफाई अभियान का आयोजन किया जाएगा।

एवं वितरण योजना प्रगति समीक्षा के अनुसार बैंक कार्यक्षेत्र की कुल 12 शाखाओं की 182 ग्राम सेवा सहकारी समितियों में 58963 कृषकों का ऑनलाइन पंजीयन किया जा चुका हैं। ये पंजीयन पूर्णतया आनॅलाइन

नये किसानों को ऋण वितरण।

इस वर्ष प्रथम दृष्टया 10425 ऐसे नये किसानों का आनॅलाइन बायोमैट्रिक पंजीयन किया गया है जिन्होंने कभी भी को-ऑपरेटिव बैंक से फसली ऋण नहीं लिया है।

बैठक आज

अजमेर| जिला मजिस्ट्रेट विश्व मोहन शर्मा की अध्यक्षता में जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक 2 अक्टूबर को कलेक्ट्रेट सभागार में दोपहर 12 बजे होगी।

• पेंडिस थियेटर नई दिल्ली के कलाकारों ने किया मंचन

ग्रीक नाटक में छुपा है साहित्य का अतीतः डॉ. अनुराधा

सिटी रिपोर्टर. अजमेर

पेंडिस थियेटर नई दिल्ली के कलाकारों ने डॉ अनुराधा मारवा के निर्देशन में मंगलवार को ख्वाजा मॉडल स्कूल में नाटक का सफल मंचन किया। नाटक में मीडिया का किरदार जेनिस ने अदा करते हुए बताया कि किस तरह एक लड़की अपने प्रेम और महिला सम्मान के लिए जीवन में संघर्ष करती है और अपनी और परिवार कि रक्षा के लिए कुर्बानी देती है। बच्चों ने भी नाटक के मंचन के बाद डॉ अनुराधा मारवा से मीडिया किरदार को, कई सवालों से जाना। एक छात्रा के सवाल का जवाब देते हुए मारवा ने बताया कि आत्म शक्ति और आत्म सम्मान दोनों ही इंसान के अंदर अपने वजूद से पैदा होते है, जिसे व्यक्ति को खुद अपने अंदर पैदा करना होता है। जब तक वह हम में पैदा नही होगा तब तक हम तरक्की नही कर सकते और न ही समाज को कुछ दे सकते है। कलाकारों में प्रिया, जीशान, अरहम, रोबिन, समीर एवं निर्भरा ने सहयोग किया। सभी कलाकारों का नाजिम शकील अहमद ने स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। धन्यवाद प्राचार्य राजीव कुमार अरोड़ा ने किया।

ग्रीक लेखक यूरिपीडिस के महान नाटक मीडिया से अजमेर के युवाओं को महिला सशक्तिकरण और आत्मसम्मान का ज्ञान मिला। पत्रकारों से रूबरू होते हुए डॉ मारवा ने बताया कि ग्रीक साहित्य का एक बहुत विशाल इतिहास है। आज आवश्यकता है कि जिन लोक कलाओं को पढ़कर हमारे पूर्वजों ने अपने ज्ञान का सृजन किया है।

जेएलएनएच के जोनल ब्लड बैंक प्रभारी सम्मानित

अजमेर। राजस्थान स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी एवं राजस्थान स्टेट ब्लड ट्रांसफ्यूजन काउंसिल, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को संतोकबा दुर्लभजी हॉस्पिटल जयपुर के सभागार में आयोजित राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस पर राज्य में सबसे अधिक रक्तदान कराने पर जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के जोनल ब्लड बैंक प्रभारी डॉ.स्वर्णलता अजमेरा को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ.रघु शर्मा एवं चिकित्सा एवं स्वास्थ्य राज्य मंत्री सुभाष गर्ग ने अजमेरा को सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि ब्लड बैंक में राज्य भर में सर्वाधिक 139 स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किए एवं सबसे ज्यादा 16 हजार स्वैच्छिक रक्तदाता रजिस्टर्ड किए गए।

ख्वाजा मॉडल स्कूल में मीडिया का मंचन

अजमेर। ग्रीक लेखक यूरिपीडिस के नाटक मीडिया से शहर के युवाओं को महिला सशक्तिकरण और आत्मसम्मान का संदेश मिला। पेंडिस थियेटर नई दिल्ली के कलाकारों ने डॉ. अनुराधा मारवा के निर्देशन में ख्वाजा मॉडल स्कूल में मंगलवार को नाटक का मंचन किया। जिसमें मीडिया का किरदार जैनिस ने अदा करते हुए बताया कि किस तरह एक लड़की अपने प्रेम और महिला सम्मान के लिए जीवन में संघर्ष करती है और अपनी और परिवार की रक्षा के लिए कुर्बानी देती है। विद्यार्थियों ने नाटक के मंचन के बाद डॉ. मारवा से मीडिया किरदार को कई सवालों से जाना। एक छात्रा के सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने बताया कि आत्मशक्ति और आत्मसम्मान दोनों ही इंसान के अंदर अपने वजूद से पैदा होते हैं। जिसे व्यक्ति को खुद अपने अंदर पैदा करना होता है। कलाकारों में प्रिया, जीशान, अरहम, रोबिन, समीर एवं निर्भरा शामिल रहे। कलाकारों का नाजिम शकिल अहमद ने स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। प्राचार्य राजीव अरोड़ा ने आभार व्यक्त किया।

प्रसादी के साथ अग्रसेन जयंती महोत्सव सम्पन्न

अजमेर। श्री अग्रसेन जयन्ती महोत्सव के तहत अग्रवाल पाठशाला भवन में श्री अग्रसेन जयंती महोत्सव मंगलवार को प्रसादी के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें अजमेर के सकल अग्रवाल समाज के लोगों ने भाग लिया। इससे पहले महाराज अग्रसेन जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर पूजन किया गया। कार्यक्रम में वैश्य समाज के गणमान्य लोगों ने भी भाग लिया।

इस दिन सुबह 8 से शाम 6 बजे तक जिले के समस्त छात्रावासों में छुआछुत उन्मूलन पर विचार गोष्ठी एवं विशेष सफाई अभियान का आयोजन किया जाएगा।

एवं वितरण योजना प्रगति समीक्षा के अनुसार बैंक कार्यक्षेत्र की कुल 12 शाखाओं की 182 ग्राम सेवा सहकारी समितियों में 58963 कृषकों का ऑनलाइन पंजीयन किया जा चुका हैं। ये पंजीयन पूर्णतया आनॅलाइन नये किसानों को ऋण वितरण।

इस वर्ष प्रथम दृष्टया 10425 ऐसे नये किसानों का आनॅलाइन बायोमैट्रिक पंजीयन किया गया है जिन्होंने कभी भी को-ऑपरेटिव बैंक से फसली ऋण नहीं लिया है।

बैठक आज

अजमेर| जिला मजिस्ट्रेट विश्व मोहन शर्मा की अध्यक्षता में जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक 2 अक्टूबर को कलेक्ट्रेट सभागार में दोपहर 12 बजे होगी।

• पेंडिस थियेटर नई दिल्ली के कलाकारों ने किया मंचन

ग्रीक नाटक में छुपा है साहित्य का अतीतः डॉ. अनुराधा

सिटी रिपोर्टर. अजमेर

पेंडिंस थियेटर नई दिल्ली के कलाकारों ने डॉ अनुराधा मारवा के निर्देशन में मंगलवार को ख्वाजा मॉडल स्कूल में नाटक का सफल मंचन किया। नाटक में मीडिया का किरदार जेनिस ने अदा करते हुए बताया कि किस तरह एक लड़की अपने प्रेम और महिला सम्मान के लिए जीवन में संघर्ष करती है और अपनी और परिवार कि रक्षा के लिए कुर्बानी देती है। बच्चों ने भी नाटक के मंचन के बाद डॉ अनुराधा मारवा से मीडिया किरदार को, कई सवालों से जाना। एक छात्रा के सवाल का जवाब देते हुए मारवा ने बताया कि आत्म शक्ति और आत्म सम्मान दोनों ही इंसान के अंदर अपने वजूद से पैदा होते है, जिसे व्यक्ति को खुद अपने अंदर पैदा करना होता है। जब तक वह हम में पैदा नही होगा तब तक हम तरक्की नही कर सकते और न ही समाज को कुछ दे सकते है। कलाकारों में प्रिया, जीशान, अरहम, रोबिन, समीर एवं निर्भरा ने सहयोग किया। सभी कलाकारों का नाजिम शकील अहमद ने स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। धन्यवाद प्राचार्य राजीव कुमार अरोड़ा ने किया।

ग्रीक लेखक यूरिपीडिस के महान नाटक मीडिया से अजमेर के युवाओं को महिला सशक्तिकरण और आत्मसम्मान का ज्ञान मिला। पत्रकारों से रूबरू होते हुए डॉ मारवा ने बताया कि ग्रीक साहित्य का एक बहुत विशाल इतिहास है। आज आवश्यकता है कि जिन लोक कलाओं को पढ़कर हमारे पूर्वजों ने अपने ज्ञान का सृजन किया है।

hindustantimes

CULTURE

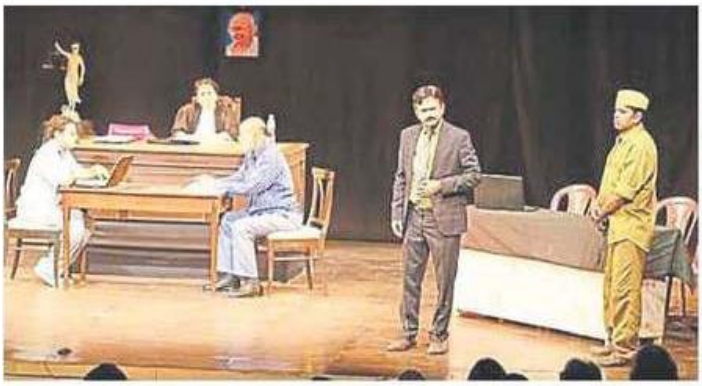

Anti-national Ghalib

A comedy play portraying the witty side of Mirza Ghalib, after a director sues his rival for using his offensive lyrics.

Where: Ghalib Auditorium, Mata Sundri Women's College, Mandi House; **When:** November 24, 7.30pm

Vasiyat

A hilarious family entertainer that showcases the complexity of human emotions and the game of expectations in relationships.

Where: Little Theatre Group Auditorium, Copernicus Marg;

When: November 23, 5pm

Medea

Based on the Euripides' (460-408 BCE) tragedy, the play tells the story of a woman who wreaks vengeance and makes us ask why that happened.

Where: Amaltas Hall, India Habitat Centre, Lodhi Road;

When: November 23, 7pm

THEATRE

MEDEA BY PANDIES

Pandies Theatre presents 'Medea' - a story of heart-break and after". It tells the story of a woman who wreaks terrible vengeance but Euripedes' sensitive rendering of the age-old myth leads us to ask questions as to why this happened. These questions are relevant even today in our still unequal world.

November 23, 7.00pm

Amaltas, India Habitat Centre, Lodi Road, New Delhi

Understanding Medea

As part of project "Samtal: Theatre for Everyone", Pandies Theatre brings "Medea", written more than two thousand years ago. With Samtal, the group plans to take classical theatre out of auditoriums and elite intellectual spaces directly to the people.

"Medea" is the story of a woman who wreaks terrible vengeance but Euripedes's (485-406 BCE) rendering of it enables us to ask questions about why this happened. These questions are relevant even today in our still gender-unequal world.

The myth of Medea has a rich history of performance and continues to be explored by various performance artists, feminists and post-colonialists, in Kabuki and ballet, in adaptation as well as in its primordial Greek format.

Directed by Anuradha Marwah, the group is putting up "Medea" with live music and dance as a 50-minute play in Hindi/ Hindustani at Amaltas, India Habitat Centre on November 23, 7 p.m. and at Studio Safdar, 2254/2A Shadi Khampur, New Ranjit Nagar, New Delhi on November 24, 4 p.m. and 7 p.m.

THE HINDU

'Medea' in the round

Reaching out: Director Anuradha Marwah Special Arrangement

Theatre director Anuradha Marwah on taking classical works to spaces that are accessible to general public

The stage is ready, instead of a set it is packed with chairs for the audience, while the house lights are on. The performers are neither in the wings nor on stage. In their simple Greek costumes, they break into dialogue from among the audience in the hall as they begin their performance. In Pandies' Theatre group's adaptation of the Greek classic, "Medea", theatre director Anuradha Marwah explores a democratic performance dynamic that brings actors and audience on the same level, setting aside the idea of the stage.

Performed in the round, the concept attempts to bring classical drama into everyday arena by merging spaces and challenging conventional theatre strategies. The production has been featured in diverse settings across Delhi, ranging from intimate performance venues like the basement theatre at India Habitat Centre and Studio Safdar to colleges and women's shelter homes.

Levelling the stage

"This is the concept of Samtal," she explains. "Mostly, classical works are performed on the proscenium stage, in ways that are inaccessible to the general public. With Samtal, we take nuanced and profound themes to everybody, focusing on the human element that often gets overlooked when the productions are extremely intellectualised." The term 'samtal' literally means a level field. Seeking to bring world theatre classics to new audiences, the concept also involves opportunities for discussions between the audience, cast and crew of the production.

Marwah reflects on the evolution of the idea that inspired her to direct the play, "I was inspired by the work of theatre group Ten Thousand Things' and dreamed-up of 'Samtal' while in Minneapolis on a Fulbright-Nehru Academic and Professional Excellence (FNAPE) Fellowship in 2017. It's a door that opened up a whole new area of creativity for me. I am essentially a writer, and never actually thought of myself as a director. When I started to think of Samtal, it was something very new for me and I was like a child wanting to explore new things." The community theatre work of Ten Thousand Things involved taking iconic plays to non-traditional venues. Performing in the round, with all the lights on, attracted

her because the audience would also become a part of the performance in this way.

Finally, in 2019, Michelle Hensley, founder of Ten Thousand Things along with playwright Kira Obolensky, came to Delhi and trained the creative team of Samtal for performance in the round.

Adapting ‘Medea’

A scene from “Medea”

“Finding the play that would begin this programme was really challenging,” recalls Marwah. “The script is very strong and I was apprehensive whether a radical work like Medea would work in the kind of rendering we were planning.” When she presented the first draft of the adaptation to her performers at the reading, they found it challenging and amusing. “It seemed too grandiose to be performed in the round. I realised it had to be much more conversational and spent another month reworking the script!”

Though the play is distant in time and space, Marwah was confident that it would resonate with contemporary contexts and spark discussion and debate with the audience. “We premièred the play in Shakti Shalini shelter

home for women in Nithari Basti. The audience had absolutely no familiarity with Greek drama yet they responded and wanted to talk." The power of the play lies in bringing out the audience from the space of passive spectatorship into an active dialogue about their own lives. "In educational institutions, or studio spaces, it was intense, people wanted to talk about their lives – relationships, sexuality. Topics that are conventionally taboo could be broached because we are looking at them through the play, it was somebody else's story, so it becomes easy to voice opinions."

Democratic forum

The shows extended much beyond the performance with deeper conversations with each group. While the text and theme of Medea opened up insights into the audience's own lives, the discussions delved into different points of view. In the shelter home, for instance, women opened up about their own experiences of abuse and abandonment. Urban audience in studio settings were enamoured with the dynamic aesthetics of performance in the round, while students expressed curiosity about politics and directorial choices.

For Marwah, exploring theatre as a levelled and democratic space stems from her own beliefs and feminist politics. "The beauty of performing in the round with classical texts is that a wide range of audience respond to it, cutting across class and socio-economic divide." As the production gains momentum, there are more performances coming up in other cities, towns and villages. The theatre group is busy bracing up for unexpected questions from the audience, more intense dialogues to draw them in and their own conversation with a classic from the past.

Source: https://www.thehindu.com/entertainment/theatre/medea-in-the-round/article30461626.ece

Pandies' Theatre performs at S.M.A., Ajmer

Dr. Anuradha Marwah (an alumnus of the 1979 Batch) along with her theatre group visited S.M.A., Ajmer on 30th September 2019. The actors performed a Greek tragedy written by Euripedes under 'Project Samtal'. The play 'Medea' portrayed the position of women, dalits and other minorities. With a strong message for the upliftment of women, the play left an indelible mark on the minds of the students of the senior classes. The play lasting 55 minutes was followed by a short interaction session with the Director (Dr. Marwah) and the actors who answered questions raised by the students. The Principal, Sr. Sheena expressed gratitude and extended good wishes by presenting a small token in the form of a green plant and a memento to Dr. Marwah and hand crafted cards (created by the students) to the actors. The welcome address was read out by Ms. Elvira Fernandez and the vote of thanks was given by Jhanvi Verma of XI Arts.

It was a wonderful opportunity for the students to witness high quality theatre in Hindustani at their very door step.